

सूचना

दिनांक

04/03/24

महाविद्यालय के सम्बन्ध
दात्रों को सूचित किया जाता
है कि 8 मार्च महिला दिवस
के उपलक्ष्य में महिला सशक्ति-
करण विषय पर परिचर्चा
आयोजित है जिसमें सभी
की उपस्थिति अनिवार्य है।

स्थान - हिन्दी विभाग

समय - 1:00 बजे

विषय - महिला सशक्तिकरण

 PRINCIPAL
G. M. M. A. & Commerce
Bhopal

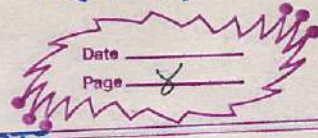
शाम
06/03/24
विभागाध्यक्ष (हिन्दी)

दिनांक: 5/3/2024

परिचर्चा

हिन्दी विभाग

महिला सशक्तिकरण



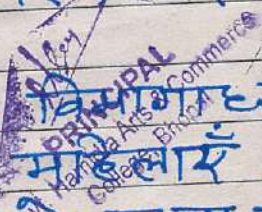
आज दिनांक 5/3/2024 को हिन्दी विभाग में 'महिला दिवस' के उपलक्ष्य में परिचर्चा का आयोजन किया गया।

जिसमें हिन्दी, संस्कृत एवं उर्दू विभाग के प्राध्यापक उपस्थित रहे।

उर्दू विभाग की अध्यक्ष डॉ. अर्जुमंद बानो मैडम ने कहा कि पहले महिलाएँ पर्दे में रखा करती थीं और तब प्रत्येक कार्य में पीछे रहती थीं। महिलाओं में बहुत काबलियत है उन्हें जब भी अवसर दिया जाए वे मर्दों के बराबर जाकर खड़ी हो सकती हैं। उन्होंने इस्मत चुगताई कर्तुलीन हैदर जैसी महिलाओं का उदाहरण भी प्रस्तुत किया। अब महिलाओं खुलकर बोलने की सहूलियत प्राप्त हुई। आज वे काफी प्रगतिशील हो गई हैं। प्रत्येक क्षेत्र में वे क्रियाशील हैं।

डॉ. सुधीर रंजन सिंह ने कहा कि सभी लोगों को व्यूटीमिथ जैसी पुरस्कृत को पढ़ना चाहिये। उन्होंने सीमोन द बकअ का उद्धृत किया। अनेक विषयों पर 'केस स्टडी' को पढ़ना व उन पर विचार करना चाहिये।

डॉ. शारदा सिंह ने कहा कि महिलाएँ अब कार्यरत हैं उन्हें वहीं आगे बढ़ना है।



सभी महिलाएँ सुखद होंगी। महिलाओं में चारित्रिक सौंदर्य बनाए रखना होगा।

डॉ. शीला ठाकुर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि - नारी को उपभोग की वस्तु नहीं मानना चाहिये। वे पुरुषों की तुलना में कहीं कमतर नहीं अतः आज लोगों की सोच बदलने की आवश्यकता है। जन साधारण में जागरूकता की आवश्यकता है। कहीं-कहीं पद लिखकर नारी अपवाद भी बनी है। महिलाओं अदम्य क्षमताएँ हैं।

डॉ. संगीता कोलावत ने कहा कि - प्राचीन काल में नारी अत्यंत सशक्त थी। मध्यकाल में वह उपभोग की वस्तु मान ली गई। उसे चारदीवारी में कैद कर दिया गया। राजा राम मोहन राय ने स्त्रियों की स्थिति में सुधार का प्रयास किया। आज महिलाएँ सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ी हैं। परंतु, पारिवारिक महिला की स्थिति आज भी दोयम दर्जे की है। माँ को बच्चों को स्वयं संस्कारित करना होगा।

डॉ. महेश्वरी ने कहा कि माँ ही अपने बच्चे को पूरी तरह से संस्कारित कर सकती हैं, पहले की तरह ही अपने पड़ोसी की रोक टोक का बुरा नहीं मानना चाहिये। नारी की अस्मिता पर जब भी चोट पड़ी उसने काली व दुर्गा का अवतार लिया। वो लोक-निंदा की परवाह भी नहीं करती।

डॉ. रानू निवारी ने कहा - महिला का पढ़ा लिखा होने पर वे स्वयं निर्णय

लेने में सक्षम हुई हैं। उन्हें दूसरों के साथ-साथ खुदके स्वास्थ्य पर ध्यान देना है। यह उसे सशक्त बनाएगा। उसे आर्थिक रूप से सक्षम रहना होगा। उन्हें मानसिक रूप से दुरुस्त होना है।

अंत में डॉ. रचना तैलंग ने कहा कि हमें महिलाओं को सशक्त बनाने हेतु स्वयं प्रयासरत रहना होगा। महिला परिवार की धुरी है और उसके प्रयास ही घर, परिवार, देश और समाज को आगे बढ़ाएंगे। उसकी साक्षरता ही समाज में परिवर्तन ला सकती है। शर्म आँखों में होती है वह लिंग विशेष से आबद्ध नहीं है सभी की आँखों में शर्म लेना चाहिये।

कार्यक्रम का समापन करते हुए सभी को डॉ. शारदा सिंह ने धन्यवाद सापित किया।

1. डॉ. अर्जुनमंद बानो
2. डॉ. सुधीर रंजन सिंह
3. डॉ. रचना तैलंग
4. डॉ. शीला ठाकुर
5. डॉ. संगीता कोलावत
6. डॉ. गहसु वर्मा
7. डॉ. रानू तिवारी
8. डॉ. सीमा परवीन

A Bano
3/24

21
Rachana
Shinde

Ganesh

Ganesh

PRINCIPAL
Smt. Hemdita Arora
G.D. College

डॉ. शारदा सिंह
विभागाध्यक्ष